हिन्दी

एम.ए. III सेमेस्टर IV पेपर
हिन्दी भाषा का विकास

प्राचीन आर्य भाषा ~~काल~~

वैदिक संस्कृत

संस्कृत का यह रूप वैदिक संहिताओं ब्राह्मणों, आरण्यकों तथा प्राचीन उपनिषदों में मिलता।
वैदिक साहित्य में इस भाषा का विकास होता दिखाई पड़ता है

विशेषताएँ

मूल स्वर
अं, आ, इ, ई, उ ऊ ऋ
ॠ, ऌ

संयुक्त स्वर -
ए, ऐ, ओ, औ;

व्यंजन -
क, ख, ग, घ, ङ.
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ ण
त, थ, द, ध, न

प, फ, ब, भ, म

य र ल व स श ष ह ळ

विसर्ग- जिह्वा मूलीय तथा उपध्म

ह के उपस्वनिम थे

अ, व, य आदि कई अन्य के

उपस्वनिम थे।

रूप रचना

वैदिक भाषा में लिंग थे

स्त्री लिंग

पुल्लिंग

नपुंसकलिंग

वचन तीन थे —

एक वचन

द्विवचन

बहुवचन

कारक विभक्तियाँ आठ थीं —

कर्ता

सम्बोधन

कर्म

करण

सम्प्रदान

अपादान

सम्बन्ध

अधिकरण